Vol. 11, Issue-1 (January 2022) pp.207-211 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

भारतीय संस्कृति के समन्वयात्मक रूप का मूर्त प्रतीरूप भारतीय संगीत

डा. रवि जोशी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संगीत विभाग, डी.एस.बी परिसर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)
Email: ravijoshimusic@gmail.com

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत की गौरवशाली धर्मनिरपेक्ष परंपरा, तथा उसके आत्मिक एवं आध्यात्मिक दर्शन की प्रासंगिकता जितनी आज के युग में है उतनी शायद ही कभी रही हो. यह युग सामाजिक, आर्थिक असमानता तथा धार्मिक राजनैतिक अस्थिरता का युग है. सूचना तंत्र ने मनुष्य को विश्व नागरिक तो बना दिया किन्तु अब आवश्यकता एक ऐसे सूत्र की है जो इस विश्व बंधुत्व को सप्रमाण सबके सामने प्रस्तुत कर सके. भारतीय शास्त्रीय संगीत ही वह सूत्र है जिसकी गंगा जमुनी धारा में न केवल भारतवर्ष वरन् सम्पूर्ण विश्व के सभी जाति धर्म के लोग समाए हुए हैं. इस प्रकार भारतीय संगीत ने भी अपना विकास एवं परिष्कार किया है तथा समस्त विश्व के समक्ष वैश्विक एकता का उदहारण भी प्रस्तुत किया है.

मुख्य बिंदु : भारतीय संस्कृति, ध्रुपद गायन , सदारंग, भारतीय संगीत, प्रबंध गायन

भारतीय संस्कृति का निर्माण मानव एकता की एक विशाल और उदात्त भावना के आधार पर हुआ है. इसका मूलमंत्र है 'वसुधैव कुटुम्बकम''. मानव एकता की इस अनुभूति का साक्षात्कार तपस्यारत वैदिक ऋषियों कि चेतना की गहराइयों में हुआ था. रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी एक कविता 'भारत तीर्थ' में इसका सुन्दर वर्णन किया है-

"किसी दिन यहाँ महा ओंकार की अविराम ध्वनि
हृदय के तार में एंक्य के मंत्र से झंकृत हुई थी.
ताप के बल से 'एक' के अनल में 'बहु' की आहुति दे
भेद-भाव भुलाकर एक विराट हृदय को जगाया था."[1]

भारतीय संस्कृति के मानव एकत्व के इस मूल सिद्धांत को और भी स्पष्ट करते हुए महर्षि श्रीअरविंद (1872-1950) कहते है, "भारतीय संस्कृति सामंजस्य के एक ऐसे सिद्धांत को लेकर अग्रसर हुई जिसने एकता में ही

[1] हिंदी अनुवाद रवीन्द्र रचना संचयन, संपादक असित कुमार बंधोपाध्याय पृष्ठ – 134

अपना आधार पाने की चेष्टा की और उससे आगे किसी महत्तर एकत्व तक पहुँचने का प्रयास किया. उसका ध्येय एक ऐसे स्थायी संगठन का निर्माण करना था जो संघर्ष के तत्त्व को कम कर दे या यहाँ तक कि उसका बहिष्कार ही हो जाए".[2] परन्तु कालक्रम से विपरीत ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण भारतीय संस्कृति के इन समन्वयात्मक सिद्धांतों में एक प्रकार की कृत्रिमता आ गई, जो आधुनिक काल में भी राजनीतिक स्वार्थों के कारण व्याप्त है. इसके विपरीत भारतीय पारंपरिक संगीत में आधुनिक काल तक भारतीय संस्कृति की इस समन्वयात्मक उदार वृत्ति के दर्शन होते हैं.

मुस्लिम शासन के आदि काल से ही भारतीय संगीत में (12वीं शताब्दी) सांस्कृतिक समन्वय का जो रूप दिखता है वह साहित्य, चित्रकला व स्थापत्य आदि संस्कृति की अन्य अभिव्यक्तियों से अलग व अत्यंत विलक्षण है. जहाँ अन्य कलाओं ने विदेशी तत्वों को अपने अन्दर समा लिया अथवा उन तत्वों से समझौता कर लिया इसके विपरीत भारतीय संगीत ने विदेशी शासकों व उनके साथ आये हुए विद्वानों को अपने वश में कर लिया था. इसका प्रमाण अलाउद्दीन खिलजी (1296-1313) के दरबार के प्रमुख संगीतकार महान ध्रुपद गायक नायक गोपाल थे. भारतीय संगीत की यह 'ध्रुपद-विधा' इसके पूर्व की विधा 'प्रबंध-गायन' से ही विकसित हुई थी और इसकी शाब्दिक व तात्विक संरचना का आधार आध्यात्मिक था. दोनों विधाओं का प्रमुख रस 'भक्ति-रस' ही था. अलाउद्दीन जैसे कट्टर शासक का भारतीय संगीत से प्रभावित होना यह इस संगीत की आतंरिक शक्ति का द्योतक है.

14वीं शताब्दी से मुस्लिम शासकों के राज-दरबारों में भारतीय संगीत व संगीतज्ञों को प्राधान्य देने की इस परंपरा की पराकाष्ठा मुगल शासक अकबर(1556-1605) के शासनकाल में दिखती है. उसकी राज्य-सभा के नवरत्नों में से एक प्रमुख रत्न महान ध्रुपद गायक तानसेन थे यह एक सर्वविदित तथ्य है. तानसेन जो मूलतः वृंदावन निवासी स्वामी हरिदास के शिष्य थे, परन्तु इतिहासकार अल-बदाउनि के अनुसार तानसेन ने बिहार के सुल्तान मोहम्मद आदिल (1549-1556) से भी संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी.[3]

सुल्तान मोहम्मद आदिल की तरह ही कुछ अन्य मुस्लिम शासक भी भारतीय संगीत में पारंगत थे. यह तथ्य इसलिए महत्वपूर्ण है कि भारतीय संगीत का मूलश्रोत वैदिक सामगान है तथा उसको निरंतर अनुप्राणित करता मूलतत्व है ऋषि-चेतना में उद्भूत नाद-ब्रह्म का साक्षात्कार. जबकि इस्लाम में संगीत कुफ्र है.

18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के अंत के बाद भी विभिन्न राज्यों के नवाबों व राजाओं के आश्रय में भारतीय संगीत प्रगति करता रहा. भारतीय संगीत के इतिहास के इस कालखंड की विशेषता यह है कि जहाँ एक ओर कई नवाबों के राज्य में हिन्दू गायक-वादक रोजी-रोटी की चिंता से मुक्त होकर प्राचीन भारतीय पद्धति के अनुसार ही

[2] भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरविंद पृष्ठ -50

[3] Adil Which was the popular name of Sultan Mohammad Adil , king of bihar (Reign A.D. 1549-1556) And son of Nizam Khan Sur,was agreat master of singing and dancing . Miyan TansenaWho was himself a great musician, used to own to being his pupil.
(SIC.) – Dhrupad – Indurama Srivastava, page-133

साधना-तपस्या करते रहे, वहीं दूसरी ओर हिंदु राजाओं के संरक्षण में मुस्लिम संगीत-साधकों के घराने पीढ़ी-दर-पीढ़ी भारतीय संगीत के विकास में अपना अमूल्य योगदान देते रहे.

भारतीय संगीत के इस विकास-क्रम में ही अंतिम मुगल बादशाह मुहम्मद शाह 'रंगीले' (1719-1748ई.) के दरबारी गायक नियामत खां 'सदारंग' (1670-1748) ने भारतीय संगीत की विधा खयाल-शैली को अपनी अप्रतिम सृजनात्मक प्रतिभा से वह रूप दिया जो दो सौ वर्ष बाद आज भी प्रचलित है. भारतीय संगीत के इतिहास की यह एक युग-परिवर्तनकारी घटना है. क्योंकि, प्राचीन ध्रुपद गायन-विधा तब तक निष्प्राण हो चुकी थी.

इस शैली के स्थान पर खयाल शैली को सदारंग ने अपनी अनेक मौलिक रचनाओं के द्वारा स्थापित किया और तत्कालीन सांस्कृतिक-राजनितिक संकट के बावजूद उन्होंने भारतीय संगीत को युगानुकूल गहराई प्रदान की. 'सदारंग' ब्रजभाषा के महाकवि देवदत्त'देव'(1673-1767ई.) के शिष्य थे और उनकी कई रचनाओं में हिन्दू देवी देवताओं का वर्णन है. इसका एक उदाहरण उनकी राग बिलावल की निम्न रचना है-

(राग बिलावल, तीनताल, मध्य लय)

(स्थायी)
"जाग उठे सब जन तुम जागो
गैय्यन के चर बाल चरैया.
(अंतरा)
ग्वाल बाल सब गैय्याँ चरावत
तुम्हरे कारण आवत जावत
'सदारंग' मन उनसों लागो"..[4]

सांस्कृतिक समन्वय के इस पक्ष का एक उदाहरण संगीत का सम्भवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण घराना 'ग्वालियर घराना' है. मुगल बादशाह मुहम्मद शाह 'रंगीले' के पतनोन्मुख राज्यकाल के दौरान सन् 1739में जब नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब दिल्ली दरबार के सभी गायक-वादक उत्तर भारत की विभिन्न रियासतों में चले गए. इनमें से 'सदारंग' के शिष्य समुदाय के कुछ प्रमुख गायक ग्वालियर रियासत के होलकर वंश के राजाओं के आश्रय में चले गए. इन्हीं गायकों ने संगीत के सबसे समृद्ध 'ग्वालियर घराने' की नींव रखी. इस घराने के मुस्लिम खयाल गायकों ने आगे चलकर अपनी विद्या हिन्दू शिष्यों को उदारता के साथ हस्तांतरित की, जिनमें से शंकरराव पंडित, उनके पुत्र कृष्णराव शंकर पंडित(1893 -1989) तथा पं.राजा भैया पूँछवाले.(1882-1956) आदि प्रमुख हैं. इसी घराने में प्रशिक्षित पं.बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर ने महाराष्ट्र में इस घराने की गायकी की नींव रखी जिसका विकास अभी भी जारी है.

[4] क्रमिक पुस्तक मलिका भाग 2 संगीत कार्यालय हाथरस पृष्ठ 81- 82

भारतीय संगीत के इस सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया के विवरण में केवल सुविधा के लिए जातिवाचक शब्द 'हिन्दू' तथा 'मुस्लिम' का मैं प्रयोग कर रहा हूँ. अन्यथा, भारतीय संगीत की दुनिया में इस प्रकार के भेदभाव की भावनाओं का कोई स्थान नहीं है. आधुनिक काल के महान ऋषितुल्य संगीतज्ञ उ. अलाउद्दीन खॉ (1862-1972) अपने मजहब के साथ-साथ मैहर की देवी माँ शारदा के भी भक्त थे. उन्होंने इस युग के जिन प्रतिभाशाली शिष्यों को अपनी विद्या दी, उनमें से उनके पुत्र उ.अली अकबर खां के अतिरिक्त पं.रवि शंकर, पं.पन्नालाल घोष, पं.निखिल बैनर्जी आदि सभी हिंदु थे.

इसी प्रकार शहनाई नवाज उ.बिस्मिल्ला खां (1916-2006) काशी के प्रसिद्ध पूजा स्थल, भैरव नाथ के मंदिर में रियाज़ करते थे, जहाँ उनको भगवान भैरवनाथ का साक्षात्कार हुआ था. मूर्धन्य मुस्लिम उस्तादों के इस आध्यात्मिक पक्ष को उजागर करते और भी अनेक उदाहरण है, जैसे उ. अब्दुल करीम खां (1872-1937) ने संस्कृत के श्लोकों को तथा गायत्री मंत्र को शुद्ध रूप से गाकर महाराष्ट्र के पंडितों को उनके ही क्षेत्र में परास्त किया था.[5] उ. अब्दुल करीम खां के आकस्मिक देहांत कि घटना में भी पवित्रता का स्पर्श था. मद्रास में गायन का अंतिम कार्यक्रम देने के बाद उस्ताद, महर्षि श्रीअरविंद के बुलावे पर पांडिचेरी आश्रम जा रहे थे, उसी बीच ट्रेन में ही उनकी तबियत बिगड़ गई और वे शिष्यों के साथ एक स्टेशन पर उतर गये. उसी स्टेशन के प्लेटफार्म में नमाज़ पढ़ी, और उसके बाद उनका प्राणांत हो गया.

भारतीय संगीत की तरह ये तपस्वी उस्ताद स्वयं ही भारतीय संस्कृति के समन्वयात्मक रूप के जीवंत प्रतीक थे. आज भी विख्यात सरोद-वादक उ. अमजद अली खां आदि सिद्ध संगीत-साधक अपने संगीत के माध्यम से भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित विश्वैक्य की भावना का दुनिया के अनेक देशों में प्रचार-प्रसार कर रहे है. परिणामतरू पश्चिम की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति के भौतिकवाद से ऊब कर जीवन के अर्थ की खोज में भारतीय संगीत की ओर आकृष्ट हो रही हैं.

भारतीय संगीत के शास्त्रीय, भजन-कीर्तन तथा सस्वर मंत्रोच्चार आदि के विभिन्न प्रकारों में अमेरिका, यूरोप, जापान आदि देशों में विश्व-शान्ति की जो झलक दिखती है, इसका कारण यह है कि भारतीय संगीत शिल्प-प्रधान कला मात्र न होकर नाद-ब्रह्म की साधना का एक सशक्त साधन है जिसका उदेश्य विश्व-प्रकृति में व्याप्त सौन्दर्य व आनंद का अनुसंधान है. इसका सूत्र वाक्य है- "शब्द ब्रह्माणी निष्णान्तरू पर ब्रह्माधि गच्छति.[6]"

अर्थात- "शब्द ब्रह्म का निष्णात परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है."

विश्व के अनेक देशों का युवा वर्ग जो भारतीय संगीत के माध्यम से भारतीय संस्कृति की ओर आकृष्ट हो रहा है यह एक शुभ संकेत है क्योंकि पश्चिम के थिओडोर एडोर्नो (ई.1903-1969), हान्स-जिओर्ज गेडेमर (1900-2002)

[5] Able to best Brahmins on their own terms by singing there slokas with attention to laya and sur, Abdul Karim demonstrated the musically corret way to sing the gayatri mantra
Jankai Bakhle, To Men And Music. Page-220

[6] शब्द ब्रह्म नाद ब्रह्म, पंडित श्री राम शर्मा पृष्ठ- 44

तथा सर रोजर स्क्रूटन (1944-) आदि प्रमुख दार्शनिक-चिन्तक साहित्य, संगीत, चित्रकला, आदि कलाओं में अंतर्निहित सौन्दर्य व सौन्दर्यानुभूति में विश्वव्यापी सांस्कृतिक संकट का समाधान देखते हैं.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग 2, सम्पादक डा. लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, 1999
2. बंधोपाध्याय, असित कुमार. *रविन्द्र रचना संचयन* (हिंदी अनुवाद) साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1987
3. श्री अरविन्द. *भारतीय संस्कृति के आधार*. श्री अरविन्द सोसायटी पोंडिचेरी, 1968
4. शर्मा, पं श्रीराम. *शब्द ब्रह्म- नाद ब्रह्म*. अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1995
5. Bhakhle, Janki. *To men and music Permanent Black*. Ranikhet, 2008
6. Shrivastav, Indurama. *Dhrupad*. Motilal Banarasidas, New Delhi, 1987